अन्ततः स्वतंत्र

विश्वास के द्वारा स्वतंत्र–2

डॉ. डेविड प्लॉट

आइए हम गलातियों पत्री अध्याय 2 खोल लें। हमारे इस अध्ययन में महान वचन हमारी प्रतीक्षा में है। इसका यह अर्थ न निकालें कि हमारे अन्य अध्ययनों में वचन महान नहीं हैं परन्तु मेरी प्रार्थना यह है कि इस अध्ययन में वचन हमारे मन में जीवन्त हो और हमारे जीवन बदल दे वरन् हमारी विश्वास की समझ को भी बदल दे। अतः मैं प्रार्थना करना चाहता हूं।

पिछले अध्ययन में हमने देखा कि हम कैसे अनुग्रह द्वारा मुक्त किए गए हैं। हमने एक अपूर्व विचार देखा है कि परमेश्वर आपसे इसलिए प्रसन्न नहीं है कि आप ने उसके लिए कुछ किया। हमने गलातियों अध्याय 1 में इसे देखा कि एक ओर यह एक मुक्तिदायक सत्य है तो दूसरी ओर यह निराशाजनक सत्य भी है क्योंकि आप सोचते हैं, "मैं तो परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहता हूं और यदि मैं परमेश्वर को प्रसन्न नहीं कर सकता तो वह प्रसन्न कैसे होगा?"

और आप नये नियम में खोज करने लगते हैं कि हम परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए कैसा जीवन जीएं– जैसे, 2 कुरिन्थियों 5, 1 थिस्सलुनीकियों 2:4, 1 थिस्सलुनीकियों 4:1 आदि। अब प्रश्न यह उठता है, "यदि परमेश्वर की प्रसन्नता मेरे कर्मों द्वारा नहीं तो मैं उसे कैसे प्रसन्न कर सकता हूं?"

इस प्रश्न के उत्तर की खोज में गलातियों अध्याय 2 हमारी सहायता करेगा। हम यहां गलातियों अध्याय 2 में तीन परिदृश्य देखेंगे। इनसे हमें संपूर्ण अध्याय की समझ प्राप्त होगी। हम तीसरे पर कुछ अधिक ध्यान देंगे।

आइए हम पहला परिदृश्य देखें। यहां हमारे पास दो प्रसंग हैं और फिर उनका वर्णन।
पहला परिदृश्य है गलातियों 2:1–10। यह गलातिया प्रदेश की कलीसियाओं को पौलुस का पत्र है। पौलुस लिखता है।

गलातियों 2:1–10, "चौदह वर्ष के बाद मैं बरनबास के साथ फिर यरूशलेम को गया, और तीतुस को भी साथ ले गया। मेरा जाना ईश्वरीय प्रकाशन के अनुसार हुआ; और जो सुसमाचार मैं अन्यजातियों में प्रचार

करता हूं, उसको मैं ने उन्हें बता दिया, पर एकान्त में उनको जो बड़े समझे जाते थे, ताकि ऐसा न हो कि मेरी इस समय की या पिछली दोड़ धूप व्यर्थ ठहरे। परन्तु तीतुस को भी जो मेरे साथ था और जो यूनानी है, खतना कराने के लिये विवश नहीं किया गया। यह उन झूठे भाइयों के कारण हुआ जो चोरी से घुस आए थे, कि उस स्वतंत्रता का जो मसीह यीशु में हमें मिली है, भेद लेकर हमें दास बनाएं। एक घड़ी भर उनके अधीन होना हम ने न माना, इसलिये कि सुसमाचार की सच्चाई तुम में बनी रहे। फिर जो लोग कुछ समझे जाते थे (वे चाहे कैसे भी थे मुझे इस से कुछ काम नहीं; परमेश्वर किसी का पक्षपात नहीं करता)– उनसे जो कुछ समझे जाते थे, मुझे कुछ भी नहीं प्राप्त हुआ। परन्तु इसके विपरीत जब उन्होंने देखा कि जैसा खतना किए हुए लोगों के लिये सुसमाचार का काम पतरस को सौंपा गया, वैसा ही खतनारहितों के लिये मुझे सुसमाचार सुनाना सौंपा गया। (क्योंकि जिसने पतरस से खतना किए हुओं में प्रेरिताई का कार्य बड़े प्रभाव सहित करवाया, उसी ने मुझ से भी अन्यजातियों में प्रभावशाली कार्य करवाया), और जब उन्होंने उस अनुग्रह को जो मुझे मिला था जान लिया, तो याकूब, और कैफा, और यूहन्ना ने जो कलीसिया के खम्भे समझे जाते थे, मुझ को और बरनबास को संगति का दाहिना हाथ दिया कि हम अन्यजातियों के पास जाएं और वे खतना किए हुओं के पास; केवल यह कहा कि हम कंगालों की सुधि लें, और इसी काम को करने का मैं आप भी यत्न कर रहा था।"

गलातियों 2:1–10 विधिपालन से संबन्धित है जिसे हम पिछले अध्ययन में देख चुके हैं– रुढ़ीवाद जिसे मैं सही आचरण और गलत मान्यता कहता हूं।

अधिकांश विश्वासियों का मानना है कि यह घटना प्रेरितों के काम अध्याय 15 की यरूशलेम सभा का उल्लेख है जिसमें कलीसियाओं के सब अगुवे थे और निर्णय यह था कि अन्य विश्वासियों के लिए खतना करवाना आवश्यक नहीं।

दूसरी ओर वे अल्पसंख्यक हैं जो इसे प्रेरितों के काम अध्याय 15 के समय से पूर्व की बात मानते हैं। मैं अल्पसंख्यकों की ओर अपना मत दूंगा। अनेक जन जो मुझ से सहमत नहीं मुझसे अधिक बुद्धिमान हैं।
आप जो चाहे वह पक्ष चुन सकते हैं। सत्य तो यह है कि घटना का समय इतना महत्त्व नहीं रखता जितना कि यह सत्य कि यहूदी विश्वासी समस्या खड़ी कर रहे थे। पिछले अध्ययन में हम यह देख चुके हैं। उनका कहना था कि आपको उद्धार के लिए यहूदी व्यवस्था का भी पालन करना है, विशेष करके खतना करवाना।

पौलुस यह भी लिखता है कि तीतुस भी उस सभा में था, चाहे वह प्रेरितों के काम अध्याय 15 की यरूशलेम सभा थी या नहीं, सत्य तो यह है कि उन्होंने तीतुस को खतना करवाने के लिए बाध्य नहीं किया।

यह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बात है क्योंकि यदि तीतुस को खतना करवाने के लिए बाध्य किया जाता तो यहूदी विश्वासियों का पलड़ा भारी हो जाता और अनुगह के सुसमाचार का घोर अपमान होता और इसका अर्थ यही निकलता कि परमेश्वर की दृष्टि में ग्रहणयोग्य होने के लिए खतना आवश्यक है।

आप को स्मरण रहे कि हमने देखा है कि विधिपालन अपनी क्षमता में प्रयास करना है– अपने नियम निर्धारण करना है। विधिपालन वास्तव में परमेश्वर का अनुग्रह अर्जित करना है– नियमों का पालन करो तो परमेश्वर प्रसन्न होगा, आपको ग्रहण करेगा।

यही गलातियों 2:1–10 में पौलुस समझा रहा है। ध्यान दें कि यह महत्त्वपूर्ण है। आज हम खतना और पुराने नियम की यहूदी व्यवस्था पर बल नहीं देते हैं परन्तु मैं चाहता हूं कि आप इस बात पर विशेष ध्यान दें अनुचित मान्यता का उचित व्यवहार!

ध्यान दीजिए, यहूदियों का कहना था कि व्यवस्था के अनुसार खतना आवश्यक है। यह बुराई नहीं थी। संपूर्ण इतिहास में परमेश्वर के चयनित जनों को खतना करवाना आवश्यक था। इस कारण खतना अनुचित व्यवस्था नहीं थी।
परमेश्वर ने अपनी प्रजा के पालन हेतु जो व्यवस्था दी थी क्या वह बुरी थी? वह अपने आप में बुरी नहीं थी परन्तु परमेश्वर के समक्ष ग्रहणयोग्य होने के लिए उसे विश्वास का आधार बनाना बुरा था।
मैं दोहराता हूं। उचित व्यवहार बुरा हो गया क्योंकि वह परमेश्वर के सम्मुख ग्रहणयोग्य होने के विश्वास में बदल गया था। अब इसे हमारे युग में देखें।

हम खतना और व्यवस्था का पालन तो नहीं करते हैं परन्तु हम क्या अच्छे काम करते हैं? मनन समय, बाइबल अध्ययन, आराधना, मानवसेवा आदि सब अच्छे काम हैं। यह सब हमारे जीवन के लिए अच्छा आचरण हैं।

परन्तु यदि यह मान लिया जाए कि इनके द्वारा परमेश्वर हमें ग्रहण करेगा तो हम चूक जाते हैं। इसे ही अनुचित विश्वास और उचित आचरण कहते हैं। हमें रुढ़ीवाद से बचना है। हम यह न सोचें कि हमने संपूर्ण

सप्ताह अच्छा मनन किया है इसलिए आराधना में हम परमेश्वर के समक्ष अपने पड़ोसी से अधिक ग्रहणयोग्य हैं क्योंकि उसने संपूर्ण सप्ताह प्रार्थना नहीं की है।

अतः हमें उस विश्वास से सावधान रहना है जिसके कारण हम स्वयं को अन्यों से अधिक धर्मी समझें। यही रुढ़ीवाद है जिसके बारे में गलातियों 2:11 में चर्चा की गई है।

दूसरा, गलातियों 2:11 में देखिए क्या हुआ था। पौलुस कहता है, "जब कैफा अन्ताकिया में आया, तो मैं ने उसके मुंह पर उसका सामना किया, क्योंकि वह दोषी ठहरा था। इसलिए कि याकूब की ओर से कुछ लोगों के आने से पहले वह अन्यजातियों के साथ खाया करता था। परन्तु जब वे आए तो खतना किए हुए लोगों के डर के मारे वह पीछे हट गया और किनारा करने लगा। उसके साथ शेष यहूदियों ने भी कपट किया, यहां तक कि बरनबास भी उनके कपट में पड़ गया। पर जब मैं ने देखा कि वे सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते, तो मैंने सबके सामने कैफा से कहा, 'जब तू यहूदी होकर अन्यजातियों के समान चलता है और यहूदियों के समान नहीं तो तू अन्यजातियों को यहूदियों के समान चलने को क्यों कहता है?'"

इस अध्याय का दूसरा भाग बाहरी दिखावा है– बाहरी दिखावा अनुचित व्यवहार के साथ उचित विश्वास है। गलातियों 2:11–14 में जो हुआ उसकी व्याख्या करके मैं समझाता हूं। यह नये नियम की सबसे अधिक नाटकीय एवं गंभीर घटना है क्योंकि यहां प्रेरित पौलुस प्रेरित पतरस को सबके सामने झिड़क रहा है। क्या आप वहां उत्पन्न तनाव की कल्पना कर सकते हैं? वह पतरस जिसने सबसे पहला मसीही सन्देश प्रचार किया और शिष्यों का प्रधान है। उसे पौलुस चुनौती दे रहा है। यह बड़ी ही गंभीर बात है।

आइए हम प्रेरितों के काम अध्याय 10 देखें। परन्तु ध्यान रखें कि गलातियों 2 में चर्चित कलीसिया अन्ताकिया की कलीसिया है जहां लगभग सब विश्वासी अन्यजातियों से थे अर्थात वे गैर–यहूदी थे।
पतरस वहां गया और उनके साथ भोजन करता था। हमें यह बड़ी बात नहीं लगती है परन्तु इसका कुछ कारणों से गंभीर प्रभाव पड़ रहा था।

पहला, यहूदी अन्यजातियों से पृथक रहने के लिए प्रसिद्ध थे। यह संपूर्ण पुराने नियम में उनके लिए परमेश्वर का आदेश था। क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता था कि वे उनके सदृश्य मुर्तिपूजा करें।

अतः यहूदियों के लिए पृथकीकरण के कठोर नियम थे। दूसरी ओर उन्हें शुद्ध और अशुद्ध के नियम दिए गए थे। अन्यजातियों में ऐसा नहीं था।

अतः अन्यजातियों के साथ भोजन करना अनाचार माना जाता था। प्रेरितों के काम अध्याय 10 में परमेश्वर का भय माननेवाले कुरनेलियुस, एक अन्यजाति पुरुष ने दर्शन देखा कि एक स्वर्गदूत उससे कह रहा है कि वह सन्देशवाहक भेजकर पतरस को घर बुलवाए। उसकी समझ में तो आया नहीं परन्तु स्वर्गदूत का आदेश मानना आवश्यक था। जब कुरनेलियुस के सन्देशवाहक मार्ग ही में थे तब देखिए प्रेरितों के काम अध्याय 10 पद 9 में क्या लिखा है।

प्रेरितों के काम 10:9—48, "दूसरे दिन जब वे चलते चलते नगर के पास पहुंचे, तो दोपहर के निकट पतरस छत पर प्रार्थना करने चढ़ा। उसे भूख लगी और कुछ खाना चाहता था, परन्तु जब वे तैयारी कर रहे थे तो वह बेसुध हो गया; और उसने देखा, कि आकाश खुल गया; और एक पात्र बड़ी चादर के समान चारों कानों से लटकता हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है। जिस में पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, "हे पतरस उठ, मार और खा।" परन्तु पतरस ने कहा, "नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र या अशद्ध वस्तु नहीं खाई है। फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया, "जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।" तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरन्त वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया। जब पतरस अपने मन में दुविधा में था, कि यह दर्शन जो मैं ने देखा वह क्या हो सकता है, तो देखो वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर का पता लगाकर द्वार पर आ खड़े हुए, और पुकारकर पूछने लगे, "क्या शमौन जो पतरस कहलाता है, यहां अतिथि है?" पतरस तो उस दर्शन पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने उससे कहा, "देख, तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। अतः उठकर नीचे जा, और निःसंकोच उनके साथ हो ले; क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है।" तब पतरस ने उतरकर उन मनुष्यों से कहा, "देखो, जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह मैं ही हूं। तुम्हारे आने का क्या कारण है?" उन्होंने कहा, "कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनाम मनुष्य है, उसने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह निर्देश पाया है कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से वचन सुने।" तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर उनकी पहुनाई की। दूसरे दिन वह उनके साथ गया, और याफा के भाइयों में से कुछ उसके साथ हो लिए। दूसरे दिन वे कैसरिया पहुंचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठा करके उनकी बाट जोह रहा था। जब पतरस भीतर आ रहा था, तो कुरनेलियुस ने उससे भेंट की, और उसके पांवों पर गिर कर उसे प्रणाम किया; परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा, "खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूं।" और उसके साथ बातचीत करता हुआ भीतर

गया, और बहुत से लोगों को इकट्ठा देखकर उनसे कहा, "तुम जानते हो कि अन्यजाति की संगति करना या उसके यहां जाना यहूदी के लिये अधर्म है, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूं। इसी लिये में जब बुलाया गया तो बिना कुछ कहे चला आया। अब मैं पूछता हूं कि मुझे किस काम के लिये बुलाया गया?" कुरनेलियुस ने कहा, "इसी घड़ी, पूरे चार दिन हुए, मैं अपने घर में तीसरे पहर प्रार्थना कर रहा था; ता देखो, ऐक पुरुष चमकीला वस्त्र पहिने हुए, मेरे सामने आ खड़ा हुआ और कहने लगा, 'हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई है ओर तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए गए हैं। इसलिये किसी को याफा भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला। वह समुद्र के किनारे शमौन, चमड़े का धन्धा करनेवाले के घर में अतिथि है।' तब मैं ने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तू ने भला किया जो आ गया। अब हम सब यहां परमेश्वर के सामने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें।" तब पतरस ने कहा, "अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है। जो वचन उसने इस्राएलियों के पास भेजा, जब उसने यीशु मसीह के द्वारा (जो सब का प्रभु है) शान्ति का सुसमाचार सुनाया, वह वचन तुम जानते हो, जो यूहन्ना के बपतिस्मा के प्रचार के बाद गलील से आरम्भ होकर सारे यहूदिया में फैल गयाः परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ्य से अभिषेक किया; वह भलाई करता और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा, क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था। हम उन सब कामों के गवाह हैं; जो उसने यहूदिया के देश और यरूशलेम में भी किए, और उन्होंने उसे काठ पर लटाकाकर मार डाला। उसको परमेश्वर ने तीसरे दिन जिलाया, और प्रगट भी कर दिया है; सब लोगों पर नहीं वरन् उन गवाहों पर जिन्हें परमेश्वर ने पहले से चुन लिया था, अर्थात हम पर जिन्होंने उसके मरे हुओं में से जी उठने के बाद उसके साथ खाया–पीया; और उसने हमें आज्ञा दी कि लोगों में प्रचार करो और गवाही दो, कि यह वही है जिसे परमेश्वर ने जीवतों और मरे हुओं का न्यायी ठहराया है। उसकी सब भविष्यद्वक्ता गवाही देते हैं कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी।' पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। क्योंकि उन्होंने भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा, "क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?" और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे विनती की कि वह कुछ दिन और उनके साथ रहे।"

यह एक यादगार बन गई।

हम अन्यजाति विश्वासी हैं और कलीसिया में अन्यजाति प्रवेश का यह प्रथम चरण है। मैं चाहता हूं कि आप इस के महत्त्व को समझें जो अध्याय 11 पद 1 द्वारा प्रदर्शित है, "प्रेरितों और भाइयों ने जो यहूदिया में थे सुना कि अन्यजातियों ने भी परमेश्वर का वचन मान लिया है। अतः जब पतरस यरूशलेम में आया तो खतना किए हुए लोग उससे वाद–विवाद करने लगे। तू ने खतनारहित लोगों के यहां जाकर उनके साथ खाया।" तूने व्यवस्था का उल्लंघन किया है। ऐसा मत कर। वे पतरस की आलोचना करने लगे।

"तब पतरस ने आरंभ से उन्हें क्रमानुसार कह सुनाया।" पद 17, में वह अपना निष्कर्ष सुनाता है, "अतः जब परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था, तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?" तब लिखा है, "यह सुनकर वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है।" इसके तुरन्त बाद ही आप अन्ताकिया की कलीसिया के बारे में पढ़ते हैं।

पद 26 में लिखा है, "चेले सबसे पहले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए।" अतः आपने कलीसिया में अन्यजातियों का प्रवेश देखा और अन्ताकिया की कलीसिया पूरी अन्यजातियों की थी जिनके साथ यहूदी किसी भी प्रकार का संबन्ध नहीं रखते थे, अब वे परमेश्वर के राज्य के वारिस बन गए थे।

इस प्रकार पतरस अन्ताकिया आता है और गलातियों 2 में वह उनके साथ सहभागिता का आनन्द लेता है। अब यहूदी विश्वासी, विपरीत शिक्षा देनेवाले भी वहां आते हैं तो पतरस वहां के विश्वासियों से दूर होने लगता है। वह उनके साथ भोजन नहीं करता है। क्यों? वह क्यों यहूदियों की बात मानता है और अन्यजाति विश्वासियों के साथ भोजन करना त्याग देता है? यही कारण है कि पौलुस उसे चुनौती देता है।

गलातियों अध्याय 2 का मुख्य पद है, 14, "जब मैं ने देखा कि वे "(पतरस और अन्य शिष्य तथा बरनबास भी) सुसमाचार की सच्चाई पर सीधी चाल नहीं चलते," उचित विश्वास, अनुचित व्यवहार!

पतरस सुसमाचार जानता, उस पर विश्वास करता था, परन्तु उसके जीवन से सुसमाचार प्रकट नहीं हो रहा था। वह जानता था कि परमेश्वर की दृष्टि में सब ग्रहणयोग्य हैं, वे चाहे खतना किए हों या खतनारहित हों– यहूदी हों या अन्यजाति। शुद्ध भोजन करते हों या अशुद्ध भोजन! वह जानता था कि सब परमेश्वर के सम्मुख ग्रहणयोग्य है।

परन्तु उसका व्यवहार प्रकट कर रहा था कि केवल यहूदी परमेश्वर द्वारा ग्रहणयोग्य हैं इसलिए उसे उनके साथ भोजन नहीं करना है।

इसे आज के परिप्रेक्ष्य में देखें। खाने की सहभागिता से निरपेक्ष हमारे सुसमाचार प्रचार और जीवन को देखें। इसमें असंगत बातें क्या क्या हैं?

यही कारण था कि हमने पिछले अध्ययनों में देखा कि हम एक ऐसे उद्धारकर्ता में विश्वास करते हैं जो ग़रीबों में, निर्बलों में सुसमाचार सुनाने आया था और तब हमारे जीवन ग़रीबों और दुर्बलों के काम नहीं आते तो हम सुसमाचार से सुसंगत नहीं हैं। वे सुसमाचार के योग्य नहीं।

यहां एकरुपता नहीं है। इसी प्रकार किसी व्यभिचारी से यदि विश्वासी भाई या बहन कहे कि उसका जीवन सुसमाचार के अनुकूल नहीं तो वह रुढ़ीवादी नहीं है। व्यभिचार का विरोध रुढ़ीवाद नहीं, मसीही विश्वास है क्योंकि वहां आडम्बर की भूमिका है।

अतः हम, परमेश्वर के जनों को क्या करना है? हमें रुढ़ीवाद– उचित आचरण और विश्वास कि हम परमेश्वर के समक्ष कर्मों द्वारा ग्रहणयोग्य हैं दोनों का त्याग करना है।

दूसरी ओर, हमें अनुग्रह के सुसमाचार में विश्वास करना है और उस परमेश्वर की चर्चा करने से दूर नहीं रहना है जो हमें हमारे कर्मों के अतिरिक्त भी प्रेम करता है और हम सांसारिक जीवन जीएं तो हमें इससे भी दूर रहना है। एक और आडम्बर तो दूसरी ओर रुढ़ीवाद! हमें दोनों का ही त्याग करना है और इसमें वचन हमारी सहायता करता है।

हमें इस काम में वचन की सहायता आवश्यक है। हमें एक दूसरे के निरीक्षण की भी आवश्यकता होती है कि हम दूसरे को चिताएं, "सुसमाचार यह है और आपका या मेरा जीवन उससे मेल नहीं खाता है।" अतः हमें एक दूसरे की सहायता करना है कि सुसमाचार के योग्य जीवन जीएं।

यहां मैं कहना चाहूंगा कि जब मैं इस गद्यांश से अध्ययन कर रहा था और प्रार्थना कर रहा था तब निश्चय ही परमेश्वर ने मुझे चिताया कि आरंभिक कलीसिया में दो स्तरीय विश्वास था– यहूदी और अन्यजाति।

और मेरे मन में यह विचार आया कि यहूदियों को परमेश्वर का पक्ष प्राप्त था जब कि अन्यजाति द्वितीय श्रेणी के विश्वासी थे। यद्यपि आज यहूदी और अन्यजाति वाली बात नहीं है, मैं आपको ऐसे दो स्तरीय विश्वास से सतर्क रहने की चेतावनी देता हूं।

मैं नहीं चहता कि कोई हमारे बारे में कहे कि हमारे मध्य दो वर्ग हैंः एक जो मिशन कार्य करते हैं और दूसरा वे जो नहीं करते हैं। जो दशमांश देते हैं और जो नहीं देते। जो मदिरा पान करते हैं और जो नहीं करते। जो यह करते हैं और जो वह करते हैं। इस प्रकार अकस्मात ही दो श्रेणियां तैयार हो जाती हैं– एक अधिक सम्मानित और दूसरी कम सम्मानित।

हमें सावधान रहना है। हम सब एक हैं– मसीह की देह जो वचन का अध्ययन करती है और रुढ़ीवाद से दूर रहती है।

कर्मों द्वारा परमेश्वर की दृष्टि में अपने से अधिक दूसरों को स्थान देना। इसके साथ ही आडम्बर का त्याग करना और एक दूसरे की सहायता करना कि सुसमाचार के सत्य से मेल खाता जीवन रखें।
आप यह काम कैसे करते हैं? आप रुढ़ीवाद और आडम्बर का त्याग कैसे करते हैं? इसके लिए अन्तिम बात आती है– विश्वास का परिदृश्य– उचित विश्वास और उचित आचरण।

आप उचित व्यवहार और उचित विश्वास को कैसे संयोजित करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर है विश्वास। उपरोक्त दो बातों की चर्चा करने के पश्चात पौलुस 2:15 से आगे यह व्याख्या करता है।

गलातियों 2:15–21, "हम तो जन्म से यहूदी हैं, और पापी अन्यजातियों में से नहीं। तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल यीशु मसीह पर विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है, हम ने आप भी मसीह पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरें; इसलिये कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी न ठहरेगा। हम जो मसीह में धर्मी ठहरना चाहते हैं, यदि आप ही पापी निकलें तो क्या मसीह पाप का सेवक है? कदापि नहीं। क्योंकि जो कुछ मैं ने गिरा दिया यदि उसी को फिर बनाता हूं, तो अपने आप को अपराधी ठहराता हूं। मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिये मर गया कि परमेश्वर के लिये जीऊं। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिये अपने आप को दे दिया। मैं परमेश्वर

के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता; क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।"

आप यहां एक मुख्य शब्द देख रहे हैं? पद 15 और 16 में तीन बार यह शब्द, "विश्वास" आया है, "हम तो जन्म से यहूदी हैं, और पापी अन्यजातियों में से नहीं। तौभी यह जानकर कि मनुष्य व्यवस्था के कामों से नहीं, पर केवल मसीह यीशु में विश्वास करने के द्वारा धर्मी ठहरता है। अपने आप भी मसीह यीशु पर विश्वास किया कि हम व्यवस्था के कामों से नहीं, पर मसीह पर विश्वास करने से धर्मी ठहरे..." "इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी नहीं ठहरेगा। हम जो मसीह में धर्मी ठहरना चाहते हैं यदि आप ही पापी निकलें, तो क्या मसीह पाप का सेवक है? कदापि नहीं। क्योंकि जो कुछ मैं ने गिरा दिया उसी को फिर बनाता हूं, तो अपने आप को पापी ठहराता हूं। मैं तो व्यवस्था के द्वारा व्यवस्था के लिए मर गया कि परमेश्वर के लिए जीऊं। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है, और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया। मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं ठहराता, क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती, तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।"

पद 16 और पद 20 में पौलुस विश्वास पर बल दे रहा है। उसके कहने का अभिप्राय यह है कि इस गद्यांश में वरन विश्वास में हर एक बात मसीह यीशु में विश्वास पर केन्द्रित है।

मैं आपको यहां दो अतुल्य परिणाम दिखाना चाहता हूं या यों कहें विश्वास के दो अतुल्य फल। विश्वास के साथ और कुछ नहीं।

पहला, परिणाम या फल, मसीह में विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर के सम्मुख ग्रहणयोग्य ठहरते हैं। पद 15 और 16 में पौलुस पतरस से यही कह रहा है, "पतरस हम यहूदी हैं। हमने व्यवस्थापालन के कारण परमेश्वर को नहीं जाना है। हम मसीह में विश्वास के कारण आए हैं। यदि हम मसीह से अलग होकर परमेश्वर के पास आते तो हम व्यवस्था पालन करते। तब हमें क्रूस की आवश्यकता नहीं होती।

अध्याय के अन्त में वह यही कहता है, "तो मसीह का मरना व्यर्थ होता।" परन्तु हमें मसीह की मृत्यु की आवश्यकता थी जिससे कि यदि हम अपना विश्वास उसमें रखें तो परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहरें। एक और मुख्य शब्द है जो पद 16 और 17 में है, "व्यवस्था के कामों से काई प्राणी धर्मी न ठहरेगा।" इसलिए

"हमने आप भी मसीह पर विश्वास किया कि... धर्मी ठहरें।" पद 21 में वह फिर कहता है, "क्योंकि यदि व्यवस्था के द्वारा धार्मिकता होती। यह शब्द "धार्मिकता" धर्मशास्त्र में एक प्रकार का स्वर्ण शब्द है। यह हम मसीही अनुयायियों के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण शब्द है।

मार्टिन लूथर ने कहा, "विश्वास द्वारा धार्मिकता की शिक्षा ही एकमात्र आधार है जिस पर कलीसिया स्थिर रहती है या गिरती है।" जॉन कॅलविन ने कहा, "यह चूल है जिस पर सब कुछ घूमता है।" यह नये नियम का केन्द्र है और यही धर्मसुधार का केन्द्र था।

लूथर ने कहा कि यह सुसमाचार का सत्य है– धर्मी ठहराया जाना सुसमाचार का सत्य है। यह सब मसीही शिक्षाओं की धारा है जिसमें ईश्वरभक्ति का संपूर्ण ज्ञान विहित है। अतः यह अति आवश्यक है कि हम इस धारा को अन्तग्रहण कर लें और अन्यों को सिखाएं वरन् उनमें कूट–कूट कर भर दें।

पौलुस यही करता प्रतीत होता है। यह ऐसा महत्त्वपूर्ण क्यों है? मैं आपको धार्मिकता की परिभाषा दिखाना चाहता हूं जो किसी भी मसीही अनुयायी के लिए मसीही विश्वास को समझने का केन्द्र हो, बाइबल आधारित धार्मिकता पर आधारित हो।

हम इस परिभाषा के एक एक शब्द पर ध्यान देंगे क्योंकि प्रत्येक शब्द महत्त्वपूर्ण है। धार्मिकता परमेश्वर का अनुग्रहकारी कार्य है। अतः पहला, परमेश्वर का अनुग्रहकारी कार्य! यह परमेश्वर द्वारा अनुग्रह से किया गया काम है। अध्याय 2 पद 16 के अन्त में वह कहता है, "व्यवस्था के कामों से नहीं... इसलिए कि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी धर्मी नहीं ठहरेगा।"

वह भजन 143:2 का संदर्भ दे रहा है– पद 1 और 2 में भजनकार कहता है, "हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन; मेरे गिड़गिड़ाने कि ओर कान लगा! तू जो सच्चा और धर्मी है, इसलिए मेरी सुन ले, और अपने दास से मुक़द्दमा न चला! क्योंकि कोई प्राणी तेरी दृष्टि में निर्दोष नहीं ठहर सकता।" रोमियों 3 में भी यही बात कही गई है, "कोई धर्मी नहीं, एक भी नहीं।"

संपूर्ण पृथ्वी पर ऐसा कोई नहीं जिसमें ऐसी कोई बात हो कि परमेश्वर को उसे धर्मी ठहराने पर बाध्य करे। यह केवल परमेश्वर की ओर से अनुग्रह द्वारा है। यह महत्त्वपूर्ण बात है। हम यह देख चुके हैं कि उद्धार पूर्णरूप से अनुग्रह द्वारा है– हम केवल अनुग्रह द्वारा उद्धार पाए हुए हैं।

अतः हमें अति सावधान रहना है कि विश्वास को व्यवस्था पालन न मानें। यही कारण है कि हमारे लिए प्रार्थना करना भी कभी कभी संकटमय होता है क्योंकि हमारी मानसिकता में कर्मकाण्ड है– हमारे प्रभावी शब्द हमारे कर्म बन जाते हैं कि हमें उद्धार प्राप्त हो। परन्तु सच यही है कि हमारी धार्मिकता परमेश्वर का अनुग्रहकारी कार्य है। यह पूर्णरुप से परमेश्वर और उसके अनुग्रह पर आधारित है क्योंकि हम में तो इसकी योग्यता ही नहीं है। हमारी हर एक बात यही पुकारती है कि ऐसा न हो। हम कुछ देर में इस विषय पर आएंगे।

धार्मिकता परमेश्वर का अनुग्रहकारी कार्य है जिसके द्वारा परमेश्वर हमें धर्मी कहता है– दूसरा मुख्य शब्द! यह वही शब्द है जिसे न्यायाधीश अपना निर्णय कहता है।

यह प्रक्रिया नहीं एक कार्य है। यह किसी समय में होनेवाला कार्य है। हम आज से अधिक कल धर्मी नहीं हो सकते। हम अगले वर्ष आज से अधिक धर्मी नहीं हो सकते। यह एक समय पर होनेवाला कार्य है कि हम धर्मी ठहराए जाएं।

रोमियों अध्याय 5 पद 1 में पौलुस कहता है, "जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे तो, अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें।" अर्थात हम धर्मी ठहराए गए– यह परमेश्वर ने कह दिया है। यह हमारे जीवन में एक अटल घोषणा है। अब इस परिभाषा का अगला शब्द आता है– यह घोषणा एक पापी के निमित्त है।

धार्मिकता परमेश्वर का अनुग्रहकारी कार्य है जिसके द्वारा परमेश्वर पापी के लिए घोषणा करता है। यह परमेश्वर के न्याय का परिदृश्य है– परमेश्वर न्यायाधीश है और पापी का मुकद्दमा सुन रहा है– पवित्र परमेश्वर के समक्ष दोषी मनुष्य। यह अत्यधिक गंभीर बात है, विशेष करके पौलुस के लिए। हमें स्मरण रखना है कि जिस समय पौलुस का साक्षातकार प्रभु से हुआ था उस समय वह परमेश्वर के आज्ञापालन में उत्साही था।

निःसन्देह, वह कलीसिया को सता रहा था परन्तु क्यों? क्योंकि उसकी समझ में उस काम से परमेश्वर को सम्मान मिल रहा था। उसके विचार में कलीसिया पुराने नियम के विरुद्ध शिक्षा दे रही थी। अतः वह यथासंभव उत्साह से परमेश्वर की आज्ञा का पालन कर रहा था कि धर्मी ठहरे।

मसीह से भेंट करने पर उसे अपनी दुष्टता के कारण अयोग्यता का ही नहीं, अच्छाई में भी अयोग्यता का बोध हुआ। उसने अपने जीवन में जो भी अच्छे कर्म किए थे, वे कहीं भी संतोषजनक नहीं थे।

सुसमाचार ने उसे अपने पापों के सामने लाकर खड़ा कर दिया। यहां पापों को आप दुष्टता ही नहीं सब भले काम भी समझें। पुराने नियम में तो परमेश्वर हमारी धार्मिकता को मैले चिथड़े कहता है। वह परमेश्वर के समक्ष जितना अधिक अच्छे काम करना चाहता था उतना ही अधिक उसे अयोग्यता का बोध हो रहा था। अतः यहां जगत के पवित्र न्यायाधीश के समक्ष एक दोषी मनुष्य का परिदृश्य है। धार्मिकता परमेश्वर का वह अनुग्रहकारी कार्य है जिसके द्वारा वह एक पापी को धर्मी ठहराता है।

देवियों और सज्जनों यह एक अद्‌भुत सत्य है कि जगत का पवित्र परमेश्वर, सबका पवित्र परमेश्वर आपको या मुझ विद्रोही को देखता है तो उसे हमें दण्ड के दोष की अपेक्षा और कुछ नहीं दिखता है। पूर्ण रुप से पाप के दोषी!

इसलिए नहीं कि हमने क्या किया परन्तु इसलिए कि हम अपने अन्तरतम् भाग में ही दोषी हैं परन्तु यह पवित्र परमेश्वर हमें देखकर कहता है, "दोषी नहीं, धर्मी, ग्रहणयोग्य, मेरे साथ शान्ति में है।" यह बात समझ में नहीं आती। ऐसा कैसे हो सकता है?

यही कारण है कि धर्मसुधार के युग में विश्वासी लूथर और कॅलविन और अन्यों की ओर देखकर कहते थे कि यह, "न्याय की काल्पनिक कथा है।" क्या जगत का परमेश्वर मनुष्यों को ऐसे मोक्ष प्रदान करेगा, जिसमें मनुष्य कुछ भी न करे और पाप की गहराइयों में पड़ा दोषी व्यक्ति अकस्मात ही निर्दोष घोषित किया जाए? यही सुसमाचार है। यह कैसे होगा? मात्र मसीह यीशु में विश्वास लाने के द्वारा। यही एकमात्र उपाय है। परमेश्वर की दृष्टि में एक पापी धर्मी कैसे माना जाएगा? इस प्रश्न का उत्तर है, परमेश्वर मसीह यीशु की धार्मिकता को पापी के लेखे में जड़ देता है– मसीह की पवित्रता और धार्मिकता को वह पापी को दे देता है और पापी का सब कुछ लेकर अपने पुत्र पर डाल देता है। यही 2 कुरिन्थियों अध्याय 5 में लिखा है, "कि परमेश्वर ने उसे जिसमें कोई पाप नहीं था हमारे लिए पापी ठहराया।" परमेश्वर ने आपके पाप, आपका विद्रोह, मूर्तिपूजा आदि सब लेकर अपने पुत्र पर डाल दिया जिससे कि हम परमेश्वर की क्या बन जाएं? धार्मिकता।

उसने उसे गलीचे के नीचे नहीं छिपाया कि ऐसा लगे जैसे वह नहीं है परन्तु अपने पुत्र पर डाल दिया। इस प्रकार परमेश्वर ने उसे जिसमें पाप नहीं था हमारे लिए पापी ठहराया– हमारे सब पाप, हमारे पापों का दण्ड, मृत्यु, परमेश्वर का प्रकोप आदि सब अपने पुत्र पर डाल दिया जिससे कि हम परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।

मसीह की धार्मिकता आपको दे दी गई कि हम परमेश्वर के समक्ष उसी रुप में खड़े हों जैसा उसका पुत्र यीशु था कि उसने कहा, "यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे में अति प्रसन्न हूं।" अब वह हमें देखकर भी यही कहता है।

धर्मी, उचित, परमेश्वर के साथ शान्ति, परमेश्वर द्वारा ग्रहणयोग्य सब कुछ केवल मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा होता है। यही कारण था कि पौलुस पतरस को झिड़क रहा था वरन् उन सबको झिड़कता है जो अनुग्रह के सुसमाचार में कर्म जोड़ना चाहते हैं क्योंकि सब काम तो परमेश्वर ने कर दिया है। अब जो कार्य शेष रहता है वह यह है कि उसे विश्वास द्वारा ग्रहण करें– उस में विश्वास करें।

हीदेलबर्ग की मसीही शिक्षा में एक प्रश्न है, "आप परमेश्वर के समक्ष धर्मी कैसे हैं?" उस शिक्षा में व्यक्त है, केवल मसीह में सच्चे विश्वास के द्वारा।

इसके उपरान्त भी कि मेरा विवेक मुझे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन न करने का दोषी ठहराए और मेरी दुष्टता प्रवण होने के उपरान्त भी मेरी योग्यताओं की शून्यता में भी वह अपने अनुग्रह से मुझे मसीह के सिद्ध बलिदान के लाभ प्रदान करता है, मुझ में मसीह की धार्मिकता और पवित्रता रोपित करता है और मैं ऐसा दिखाई देता हूं जैसे मैं ने कभी पाप नहीं किया। उसने मुझ में मसीह की वह सब आज्ञाकारिता उण्डेल दी जो उसने मेरे कारण निभाई परन्तु आवश्यक यही है कि मैं मन में विश्वास के साथ इस अनुग्रह को स्वीकार करुं।

वाह! जैसे मैं ने कभी पाप ही नहीं किया हो। परमेश्वर मुझे ऐसा ही देखता है। एक धनवान अंग्रेज़ ने रोल्स रॉयस कार खरीदी। विज्ञापन में कहा जाता था कि वह कभी खराब नहीं होगी, कभी समस्या उत्पन्न नहीं करेगी। वह उसे लेकर फ्रांस आ गया। फ्रांस आकर वह कार खराब हो गई।

उसने कंपनी को फोन किया कि वह कार खराब हो गई है। उन्होंने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता। उन्होंने मिस्त्री को भेजा कि तुरन्त जाकर उस कार को सुधार दे। मिस्त्री कार सुधार कर इंगलैंड लौट आया। इस घटना को कई महिने हो गए तो वह व्यक्ति सोचने लगा कि कंपनी ने भुगतान के लिए बिल क्यों नहीं भेजा।

उसने रोल्स रॉयस कंपनी को लिखा, "मैं चाहता हूं कि आप मेरी कार सुधारने का खर्चा बताएं।" उन्होंने उत्तर दिया, "श्रीमान जी, हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि आपकी कार के साथ किसी भी प्रकार की शिकायत का लेखा हमारे पास नहीं है।"

देवियों और सज्जनों, इस जगत के परमेश्वर के पास भी आपके जीवन की किसी भी बुराई का लेखा नहीं है। कैसा अद्भुत सत्य! यही सुसमाचार है। उसके पास कोई लेखा नहीं है– इसलिए नहीं कि उसने उन्हें छिपा दिया परन्तु इसलिए कि उसने आपके और मेरे पाप अपने पुत्र पर डाल दिए और अब हमें किसी भी पाप का लेखा नहीं देना है।

धर्मी ठहराया जाना एक महान बात है। मसीह में विश्वास लाने के द्वारा हम परमेश्वर के सम्मुख ग्रहणयोग्य हैं। इसलिए तो धर्मसुधार के युग में विश्वासी कहते थे, "यह तो बहुत आसान है। परन्तु जीवन आचरण? उन्हें विश्वास करना है, बस?"

यहूदी विश्वासियों का कहना था, "इस प्रकार क्या आप व्यवस्थापालन की निन्दा नहीं कर रहे हैं?" पौलुस ने उनसे कहा, "नहीं, मसीह में विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर के समक्ष ग्रहणयोग्य हैं।" यह है पहली बात। अब दूसरी बात यह है कि मसीह में विश्वास के द्वारा हम परमेश्वर में जीवित हैं।

पौलुस पतरस से कह रहा था, "तुम मसीह में विश्वास रखते हो, तुम विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए गए हो और फिर व्यवस्था के आधार पर परमेश्वर के सम्मुख स्वीकरण खोजते हो।" उसने कहा कि इन अन्यजातियों का परमेश्वर द्वारा ग्रहण किया जाना व्यवस्था पर आधारित नहीं। अतः पतरस अपने व्यवहार से ऐसा क्यों प्रकट करता है कि वे परमेश्वर के समक्ष ग्रहणयोग्य नहीं हैं?

पद 18 और 19 में वह कहता है कि विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने से जीवन बदल जाता है। यदि मैं अपने विश्वास का पुनरुद्धार कर लूं तो सिद्ध होता है कि मैं ने व्यवस्था का उल्लंघन किया। क्योंकि व्यवस्था के द्वारा मैं व्यवस्था के लिए मर गया जिससे कि मैं परमेश्वर के लिए जीऊं।

अब यदि हम विश्वास द्वारा ग्रहणयोग्य नहीं तो क्या हो? यदि विश्वास ही एकमात्र मार्ग हो कि हम परमेश्वर के लिए जीएं? पौलुस कहता है कि हम विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए गए हैं और विश्वास द्वारा जीवन जीते हैं। यहां पौलुस हमारे मन परिवर्तन को अतीत की एक घटना नहीं कह रहा है कि बस प्रार्थना की और लौटकर सांसारिक जीवन में लग गए। पौलुस कहता है, "यह संभव नहीं।" यह मात्र मसीह में विश्वास नहीं है। हमारा संपूर्ण जीवन विश्वास का है।

इसीलिए पौलुस ने हमें पद 20 दिया। मैं आपको प्रोत्साहित करुंगा कि आप इसे मन में बसा लें– "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित नहीं रहा पर मसीह मुझ में जीवित है, और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।" कैसा अद्भुत पद है, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।"

इसका अर्थ क्या है? हम जानते हैं कि जब यीशु क्रूस पर चढ़ाया गया तब वह एक ऐसा कार्य था जिसे केवल वही कर सकता था और इस कारण वह सर्वथा अकेला था– परमेश्वर का सिद्ध पुत्र ही हमारे पापों का दण्ड भोग रहा था।

पौलुस यहां वही कह रहा है जो रोमियों को लिखे पत्र में भी उसने कहा– अध्याय 6, "जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया, अतः उसकी मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम सब उसके साथ गाड़े गए।"

विलियम परकिनस का कहना है, "हमें मन और मनन में क्रूसित मसीह का ध्यान करना है। पहले तो हमें विश्वास करना है कि वह हमारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया तदोपरान्त हमें अपने आप को मसीह के क्रूस पर क्रूसित देखना है।"

हमारे क्रूसित होने का अर्थ क्या है? क्या हम जीवित हैं या मृत? यह कैसे होता है? हम पाप के लिए मर जाते हैं। वह हमारे सब पापों को– पूर्व के, आज के यहां तक कि भविष्य के, सब पापों को क्रूस पर ले जाता है। मसीह ने सब पाप उठा लिए।

यही कारण है कि हमारे धर्मी ठहराए जाने को समझना अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि धर्मी ठहराया जाना क्षमा पाने से अलग है। आप अपनी एक चूक की क्षमा मांगकर फिर दूसरी चूक करते हैं और फिर क्षमा मांगते हैं। धर्मी ठहराए जाने में आप पाप करते हैं परन्तु परमेश्वर आपको निर्दोष ही देखता है। "जो मसीह में हैं उन पर दण्ड की आज्ञा नहीं।"

आत्मा और जीवन की व्यवस्था ने आपको पाप की व्यवस्था और मृत्यु से मुक्ति दिलाई है। निर्दोष! निर्दोष! निर्दोष! हम पाप के लिए मर जाते हैं। हमारे सब पाप क्रूस पर जड़ दिए गए हैं। हमारी धार्मिकता परमेश्वर के समक्ष मुहरबन्द की गई है। परमेश्वर के साथ अब हमारा मेल हो गया है। हम पाप के लिए मर गए हैं वरन् इससे भी कहीं अधिक, हम स्वयं के लिए मर जाते हैं।

हम स्वयं के लिए मर जाते हैं। पौलुस कहता है, "मैं मसीह मे साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं और अब मैं जीवित नहीं रहा।" यह पद आज के सुसमाचार को नगण्य बनाता है जिसमें हम मानते हैं कि मसीह क्रूस पर चढ़ा। यह तो दुष्टात्माएं भी मानती हैं।

गलातियों 2:16, "मसीह यीशु पर विश्वास" यहां "पर" का मूल अर्थ है "में" अर्थात मसीह के भीतर। यह दया के लिए मसीह में प्रवेश कर जाना है। अपने आप को पूर्ण रुप से उस पर आश्रित कर देना है। हम स्वयं के लिए मर चुके हैं।

पौलुस कहता है, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा– पाप का दास "मैं", भोग विलासी "मैं", स्वार्थी "मैं" आत्म सम्मान का खोजी "मैं", अहंकारी "मैं", आत्मगौरव का खोजी "मैं"। यह "मैं" अब जीवित न रहा– पत्थर का हृदय टूट गया।

घमण्ड की यह मोटी परत टूट गई। अब मैं एक दीन मनुष्य हूं। मैं मर चुका हूं। मैं अब जीवित नहीं रहा। हम पाप के लिए और अपने लिए मर चुके हैं और अब मसीह मुझ में अन्तर्वास करता है। इसका अर्थ क्या है? इसका अर्थ यह है कि उसने हमारे पाप ढांक दिए। अपने लहू से हमारे पाप ढांक दिए।

रोमियों 5:8, "जब हम पापी ही थे तो मसीह हमारे लिए मरा।" पद 9 में लिखा है, "अतः जबकि अब हम उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे"– किसके कारण?– "उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर क क्रोध से क्यों ने बचेंगे? अतः उसका लहू हमारे धर्मी ठहराए जाने का माध्यम है। हमारे पाप ढांके नहीं गए कि छिपा दिए जाएं परन्तु उसके लहू में लोप हो गए।"

वह हमारे पाप ही लोप नहीं करता है, हमारा जीवन भी बदल देता हैं इसका सौंदर्य यही है, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं।" अब यूनानी भाषा की व्याकरण समझें तो लाभकारी ही होगा। "मैं... क्रूस पर चढ़ाय गया हूं।" यहां कार्य का पूरा होना दर्शाया गया है।

इस क्रिया शब्द का अर्थ है कि काम पूरा हो गया है परन्तु अभी भी चल रहा है। मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं। अब मैं जीवित न रहा पर मसीह मुझ में जीवित है। मेरा जीवन अब पहले से अलग हो गया है क्योंकि मसीह मुझ में अन्तर्वास करता है। उसने मेरा जीवन बदल दिया है। मैं पूर्वावस्था के लिए मर गया हूं। अब मसीह मुझ में प्रतिदिन, प्रतिपल वास करता है– यह मेरा विश्वास है।

हमने पूर्व के अध्ययन में चर्चा की है कि यह सत्य है कि हम मसीह के ऋणी नहीं हैं जैसा कि प्रचलित विचार है। यीशु ने मेरे लिए क्या किया है? उसने मेरे लिए क्रूस पर अपनी जान दी। यह उसका वह काम है जो भूतकाल में पूरा हो गया है। अब मैं उसके लिए क्या कर सकता हूं?

आप सोच सकते हैं हमने कितनी बार कहा होगा, सुना होगा, "देखिए आपके लिए यीशु ने क्या कुछ नहीं किया और मैं कम से कम जो कर सकता हूं वह यह है, यह है, आदि।" यह सही विश्वास नहीं है क्योंकि आपके और मेरे लिए यीशु का कार्य भूतकाल में होकर समाप्त नहीं हो गया है कि अब आप उसके लिए जीएं।

सच तो यह है कि वह अब भी आप के जीवन में काम कर रहा है– इस पल भी। प्रत्येक दिन, प्रत्येक पल वह काम करता है। अब क्योंकि वह अब भी काम कर रहा है इसलिए हम उसे लौटाकर कुछ नहीं दे सकते। वह तो अभी भी हमें दे रहा है। यीशु इस पल भी आपमें वास कर रहा है, मेरे मसीही भाइयों और बहनों।

हम मसीह के ऋणी नहीं हैं। हम उसका आवास हैं। मसीह आप में अन्तर्वास करता है। अब यदि मसीह जीवन हमारा मसीह के लिए जीना न हो तो? सच तो यह है कि वह हमारे द्वारा जी रहा है। मसीह हमारे लिए जी रहा है, वह हम में जी रहा है और हमारे द्वारा जी रहा है।

आप कहेंगे, "मुझे इससे क्या संबन्ध?" मसीह को इससे ही संबन्ध है क्योंकि आप में से जो भी भलाई निकलती है उसका श्रेय मसीह को जाता है। वह हम में अन्तर्वासी है और विश्वास वह कुंजी है जिसके द्वारा हम परमेश्वर के सम्मुख ग्रहण किए जाते हैं और परमेश्वर के लिए जीवित रहते हैं। हम मसीह से जुड़े हुए हैं। वह हम में अन्तर्वास करता है।

मार्टिन लूथर ने कहा था, "आप विश्वास के द्वारा मसीह से ऐसे जुड़े हुए हैं कि आप और मसीह एक व्यक्तित्व हो गए हैं जो पृथक नहीं किया जा सकता।" क्या यह सुसमाचार नहीं है? "...उससे पृथक नहीं किए जा सकते वरन् सदा उसके साथ जुड़े रहते हैं।" जॉन केलविन ने कहा, "विश्वासी अपनी इच्छा के अनुसार नहीं जीता है परन्तु मसीह के अदृश्य सामर्थ्य से जीवन्त बनाया जाता है जिससे कि मसीह उसमें जीवित एवं विकासमान दिखाई दे।"

अब यह धर्मसुधारकों की बात ही नहीं है, आयन थॉमस– इन्टरवर्सिटी के अगुआ– लंदन की झुग्गी झोपड़ियों में सेवा करते थे। उन्होंने अपने विश्वास के जीवन में एक ऐसे पल की चर्चा की जब सब कुछ बदल गया था। मसीह में उनका विश्वास उद्धारक अवश्य था पान्तु उनका जीवन्त जयवन्त नहीं था। मैं चाहता हूं कि आप उनकी यह बात ध्यान से सुनें क्योंकि मेरे विचार में यह बात अनेक विश्वासियों के अनुभव की अभिव्यक्ति है।

"मैं आत्मिक रुप से पूर्णतः रिक्त हो गया था, यहां तक कि मुझे ऐसा प्रतीत होने लगा कि आगे बढ़ना व्यर्थ है। तब नवम्बर माह की एक रात, मध्यरात्री में परमेश्वर के समक्ष घुटनों पर गिरा और घोर निराशा में रोया। मैं ने कहा, 'हे परमेश्वर मैं जानता हूं कि मैं उद्धार पा चुका हूं। मैं मसीह यीशु से प्रेम करता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं बदल गया हूं। मैं ने पूरे मन से तेरी सेवा करना चाहा है। मैं ने भरसक प्रयास किया है परन्तु मैं निराशा की असफलता में हूं।" आगे वह कहते हैं, उस रात कुछ हुआ। "मैं सच कहता हूं कि उस समय मुझे जो सन्देश मिला वह मैं ने मनुष्यों से कभी नहीं सुना। उस रात परमेश्वर ने मुझ पर मसीह, मेरे जीवन का बाइबल विहित सन्देश केन्द्रित किया।"

"उस रात परमेश्वर ने कड़वाहट भरे मेरे आंसुओं के माध्यम से मुझ पर स्पष्ट किया, 'देख तू सात वर्षों से, अति निष्ठा से मेरे लिए जीने का प्रयास कर रहा है, जिस जीवन को मैं तेरे द्वारा जीने के लिए सात वर्ष से प्रतीक्षारत हूं।'"

उन्होंने कहा, सुबह जब मैं जागा तो पूर्णरुपेण एक भिन्न मसीह जीवन मुझ में था।

जॉर्ज मूलर ने केवल प्रार्थना आधारित सेवा द्वारा असंख्य अनाथ बच्चों को पाला। उनसे जब कहा गया कि उसके जीवन और सेवा का रहस्य क्या है तो उन्होंने कहा, "एक दिन ऐसा था जब मैं मर गया, पूरा का पूरा मर गया। उनकी जीवनी लिखनेवाले लेखक ने कहा, बात करते करते वह झुकते गए जब तक कि वह लगभग फर्श तक न पहुंच गए।" मैं जार्ज मूलर के लिए मर गया अर्थात उसके सोच विचार, अभिरुचियां, इच्छा, संसार के लिए मर गया, भाइयों और मित्रों के लिए मर गया अर्थात प्रतिष्ठा, मान–सम्मान, मान्यता और दोषों के लिए मर गया। तब से मैं ने केवल परमेश्वर द्वारा ग्रहण किए जाने पर मनन किया–मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया।"

उसमें मसीह अन्तर्वासी था, हडसन टेलर्स स्पिरीचुऊल सीक्रेट (हडसन टेलर का आत्मिक रहस्य) में हडसन टेलर का आत्मिक रहस्य क्या है? उन्होंने कहा, "आह! मसीह के अन्तर्वास को जानना, अनुभव करना कि आपका मन पूर्ण रुप से उस से अभिभूत है, उसकी संगति पाने के कष्टदायक प्रयासों की अपेक्षा आपके साथ सहभागिता की उसकी खोज में उसके प्रेम का बोध होना बड़ा आनन्द है। वह हमारा जीवन, हमारा बल, हमारा उद्धार है। मैं किसी भी बात के लिए अब जिज्ञासु नहीं क्योंकि मैं जानता हूं कि वह अपनी इच्छा पूरी करने में सक्षम है और उसकी इच्छा मेरी इच्छा है और उसके संसाधन मेरे संसाधन हैं क्योंकि वह मेरा है और वह मेरे साथ है वरन् मुझ में वास करता है।"

मैं आपके साथ आयन थॉमस की चेतावनी की चर्चा करना चाहता हूं, सावधान! अन्यथा मसीही होने पर भी आप शैतान के फंदे में फंस सकते हैं। आपने परमेश्वर और प्रभु यीशु को खोजकर जान लिया होगा, उसे सच्चे दिल से मुक्तिदाता ग्रहण किया। तथापि यदि आप ईश्वरभक्ति के मर्म को नहीं जानते हैं और परमेश्वर को मन में, उसके स्वरुप में आने नहीं देते तो आप बाहरी नियमों और प्रथाओं तथा मसीही समाज द्वारा आप पर लादी हुई आचरण विधियों के अधीन ईश्वरभक्त होने की खोज करते हैं– आपके चयनित समाज द्वारा लादे गए नियम जिनके द्वारा आप समाज में ग्रहणयोग्य बनना चाहते हैं।

"इस प्रकार आप मसीह से अधिक मसीही धर्म को सम्मान देते हुए मूर्तिपूजक बन जाते हैं और देहिक क्षमता में धर्मपरायणता का अन्यजाति स्वरुप अभ्यास करते हैं।"

देवियों और सज्जनों, यही मुख्य बात है। यह मसीह में विश्वास है जो उस समय का विश्वास नहीं जब आपने मन फिराव की प्रार्थना की थी परन्तु वर्तमान– इसी पल का विश्वास है। यह विश्वास कि मसीह आपमें जीवित है।

पाप के कारण आपकी देह मर चुकी है तथापि धार्मिकता के कारण आपकी आत्मा जीवित है और यीशु को मृतकों में से जीवित करनेवाले का आत्मा आपमें अन्तर्वासी है। रोमियों की पत्री अध्याय 8 में पौलुस कहता है कि मसीह आपमें वास करता है। विश्वास का अर्थ है पल–प्रति–पल उसमें विश्वास करना कि प्रत्येक परिस्थिति और प्रत्येक परीक्षा में वह आपकी हर एक आवश्यकता है।

यह हर बार अच्छे से अच्छा काम करना नहीं अपितु मसीह में विश्वास रखना है कि वह हर काम में भला है। उसके पास आना और कठोर आज्ञाओं का पालन करना, जैसा हमने अन्य अध्ययनों में देखा है। यह रुढ़ीवाद नहीं है कि मैं ऐसा करके परमेश्वर के समक्ष अधिकाधिक ग्रहणयोग्य होता जाऊं।

हम इन बातों को आडम्बर कहकर मुंह नहीं मोड़ेंगे अपितु हमारे मन यह कहते हुए, मसीह के पास भागें, "हे प्रभु, अपने जीवन में मुझे तेरी और अधिक आवश्यकता है। मुझे तेरी आवश्यकता है कि तू मेरे जीवन के उन क्षेत्रों को संभाल ले जो सुसमाचार से सुसंगत नहीं है।" हम जब पाप की परीक्षा में गिरें, पाप से संघर्ष करें तब ऐसा ही करें।

यह अगली बार अधिक परिश्रम करने का विषय नहीं है। यह प्रतिदिन पल–पल मसीह में विश्वास करने की बात है। हे परमेश्वर, मुझे विश्वास दे। हमने यहीं से आरंभ किया था– हमें अनुग्रह द्वारा उद्धार प्राप्त हुआ है, विश्वास द्वारा मुक्ति प्राप्त हुई है। हमने आरंभ करते समय कहा था, "हम परमेश्वर को कैसे प्रसन्न करते हैं?" 2 कुरिन्थियों 5; 1 थिस्सलुनीकियों 2:4 में हमने परमेश्वर के प्रसन्न करना देखा था। हम ऐसा कैसे करेंगे? हम नये नियम की इन गंभीर आज्ञाओं को कैसे मानेंगे?

इसका उत्तर है– आपको इसके लिए मसीह की आवश्यकता है। आपको उसकी उपस्थिति की आवश्यकता है, आपमें विश्वास होना है, प्रति पल उस पर भरोसा रखना है। आपको इस काम के लिए मसीह चाहिए

क्योंकि परमेश्वर की प्रसन्नता आपके विधिपालन में नहीं है। परमेश्वर की प्रसन्नता आपके लिए मसीह के काम में है।

यह एक आश्चर्यचकित करनेवाला सत्य है कि मसीह मुझ में अन्तर्वास करता है। आपके लिए 2000 वर्ष पूर्व का एक कार्य, क्रूसीकरण, ही नहीं परन्तु इस पल भी आपके जीवन में उसका कार्य है और आनेवाले पल, घंटे, आनेवाला दिन, कल सुबह जब आप सोकर जागें, सप्ताह का प्रत्येक पल उस पर भरोसा रखें कि वह आपके जीवन में काम करेगा। यह आपको क्रूस के निकट लाएगा। यह हमें मसीह को थामने के लिए बाध्य करता है। इसी स्थिति में वचन हमें कठोर आज्ञाएं देता है। इसका उद्देश्य यह नहीं कि हम अपना प्रयास करें ओर अपने विश्वास का स्वयं निर्माण करें।

इसका उद्देश्य है कि हम मसीह के निकट आएं और उसे थाम लें और कहें, मुझे मसीह की और अधिक आवश्यकता है। अब एक प्रश्न यह उत्पन्न होता है, "हम यह कैसे जानेंगे कि वह हमारी आवश्यकता पूरी करता है?" हम कैसे जानेंगे कि वह हमें परीक्षा से उबार लेगा। हमारी संपूर्ण आवश्यकताएं–जैसे हमारी संपन्नता, हमारा बल, प्रेम, आनन्द या शान्ति आदि सब वह कैसे पूरी करेगा?

पौलुस कहता है कि हम यह जानते हैं क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है और उसने अपने आप को हमारे लिए दे दिया है। यहां पौलुस अत्यधिक व्यक्तिगत बात करता है जो नये नियम का सर्वाधिक विव्हल करनेवाला पद है– गलातियों 2, "वह मुझसे प्रेम करता है और मेरे लिए अपने आप को दे दिया।"

इस सत्य पर आधारित मैं आपको चिताना चाहता हूं। मसीह में परमेश्वर आपके लिए उत्साह रखता है। वह आपसे प्रेम करता है। हमने परमेश्वर के प्रेम और संसार के प्रति मनोवेग के बारे में बहुत चर्चा की है क्योंकि यह पूर्ण रुप से बाइबल आधारित है परन्तु मैं चाहता हूं कि आप परमेश्वर के मनोवेग से न चूकें। जी हां, सब जातियों के प्रति उसका मनोवेग!

जगत के परमेश्वर के मन में आपके लिए अथाह भावनाएं हैं। उसने आपके लिए मूल्य चुकाया है। उसने आपके लिए अपनी जान दी। जिससे कि उसका सर्वस्व वर्तमान एवं भावी लाभ, सब आपके हों।
यह मसीह का अनुग्रह है केवल मसीह में विश्वास द्वारा प्राप्त होता है। यही कारण है कि हम केवल अनुग्रह द्वारा उद्धार पाते हैं और केवल मसीह में।